COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 15, Issue No: 2, Year: 2024 (July-December)
PP: 54-59
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

छायावादी कविता में व्यक्तित्व-निर्माण, आत्मबोध और मानवीय मूल्य

नेहा कुमारी

ग्राम - खदियाही, पोस्ट - विभूतिपुर, जिला - समस्तीपुर

सार

छायावादी कविता हिन्दी साहित्य की आधुनिक चेतना का एक महत्त्वपूर्ण चरण है, जिसमें व्यक्ति, आत्मा, प्रकृति, सौंदर्य, रहस्य, करुणा और मानवीय संवेदना को विशिष्ट काव्यात्मक अभिव्यक्ति मिली। छायावाद को सामान्यतः आत्मपरक काव्यधारा कहा जाता है, परंतु इसकी आत्मपरकता संकीर्ण व्यक्तिवाद नहीं है; वह मनुष्य के आंतरिक विकास, आत्मबोध, स्वतंत्र व्यक्तित्व और उच्चतर मानवीय मूल्यों की खोज से जुड़ी हुई है। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा की कविता में व्यक्तित्व-निर्माण केवल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक साधना के रूप में सामने आता है। प्रसाद के यहाँ आत्मबोध सांस्कृतिक स्मृति और मानव-गरिमा से जुड़ता है; पंत के यहाँ प्रकृति-सौंदर्य के माध्यम से मनुष्य के संवेदनात्मक विकास का मार्ग खुलता है; निराला के यहाँ व्यक्तित्व विद्रोह, स्वाभिमान और सामाजिक करुणा से निर्मित होता है; महादेवी वर्मा के यहाँ आत्मबोध वेदना, करुणा और आध्यात्मिक एकांत के माध्यम से मानवीय संवेदना को विस्तार देता है। इस शोध-पत्र में छायावादी कविता के आधार पर यह विश्लेषित किया गया है कि व्यक्तित्व-निर्माण, आत्मबोध और मानवीय मूल्य छायावाद की मूल संवेदनात्मक संरचना में परस्पर जुड़े हुए हैं। छायावादी कविता आधुनिक मनुष्य को बाह्य उपलब्धियों से अधिक अंतःसंस्कार, संवेदना, स्वतंत्रता, करुणा और नैतिक चेतना की ओर उन्मुख करती है।

मुख्य शब्द: छायावाद, व्यक्तित्व-निर्माण, आत्मबोध, मानवीय मूल्य, प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा।

1. प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास में छायावाद को आधुनिक हिन्दी कविता की वह धारा माना जाता है जिसने काव्य को बाह्य वर्णन, नैतिक उपदेश और राष्ट्रीय जागरण की प्रत्यक्ष प्रवृत्तियों से आगे बढ़ाकर व्यक्ति के आंतरिक जीवन, संवेदना, आत्मानुभूति और सौंदर्य-बोध की ओर उन्मुख किया। द्विवेदी युग में कविता का प्रमुख आग्रह समाज-सुधार, भाषा-शुद्धि, राष्ट्रीयता और शिक्षाप्रद विषयों पर था, जबकि छायावाद ने मनुष्य के भीतर छिपे हुए भाव-जगत्, आत्म-संघर्ष और स्वतंत्र व्यक्तित्व को केंद्र में रखा [1]। इस दृष्टि से छायावादी कविता हिन्दी काव्य में आधुनिक व्यक्तित्व-चेतना की स्थापना करती है।

छायावाद का विकास लगभग 1918 से 1936 के मध्य माना जाता है। इस काल में भारत औपनिवेशिक दमन, राष्ट्रीय आंदोलन, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, सामाजिक संक्रमण और व्यक्तिवादी चेतना के उभार से गुजर रहा था [2]। ऐसे समय में छायावादी कविता ने व्यक्ति को केवल सामाजिक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि भावनाशील, चिंतनशील, संघर्षशील और आत्मान्वेषी सत्ता के रूप में देखा। छायावाद के प्रमुख कवि—जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा—चारों ने मनुष्य के व्यक्तित्व को भिन्न-भिन्न आयामों से समझा। प्रसाद ने मानव-चेतना को इतिहास, संस्कृति और आनंद-दर्शन से जोड़ा; पंत ने प्रकृति, सौंदर्य और मानवतावाद के माध्यम से व्यक्तित्व का विकास देखा; निराला ने विद्रोह, स्वाधीनता और सामाजिक न्याय को व्यक्तित्व की अनिवार्य शर्त माना; महादेवी वर्मा ने वेदना, करुणा और अंतर्मुखी साधना के माध्यम से आत्मबोध की गहराई को व्यक्त किया [3]।

छायावादी कविता में व्यक्तित्व-निर्माण का अर्थ केवल व्यक्तिगत सफलता या सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं है। यह आत्म-चेतना, संवेदनशीलता, नैतिक परिष्कार, स्वतंत्र चिंतन, करुणा, सौंदर्य-बोध और मानवीय एकात्मता के निर्माण की प्रक्रिया है। इसी कारण छायावाद को केवल रहस्यवाद, प्रकृतिवाद या

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

पलायनवाद कहना उसके व्यापक रचनात्मक स्वरूप को सीमित कर देना होगा। छायावादी कविता में आत्मबोध और मानवीय मूल्य गहरे स्तर पर एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं [4]।

2. छायावाद में व्यक्तित्व-निर्माण की अवधारणा

व्यक्तित्व-निर्माण का मूल आधार आत्म-साक्षात्कार है। मनुष्य जब स्वयं को केवल बाहरी भूमिकाओं से नहीं, बल्कि अपनी अंतरात्मा, संवेदना, विवेक और स्वतंत्रता के आधार पर पहचानता है, तभी उसका व्यक्तित्व विकसित होता है। छायावादी कविता में यह प्रक्रिया अत्यंत प्रमुख है। यहाँ मनुष्य बाहरी संसार से टकराते हुए अपने भीतर लौटता है, प्रकृति से संवाद करता है, वेदना से गुजरता है, सौंदर्य का अनुभव करता है और अंततः अपने अस्तित्व का अर्थ खोजता है [5]।

छायावादी कवियों ने व्यक्ति को परंपरा और आधुनिकता के बीच स्थित माना। एक ओर भारतीय सांस्कृतिक स्मृति थी, दूसरी ओर आधुनिक स्वतंत्र चेतना का उभार। इसी द्वंद्व ने छायावादी व्यक्तित्व को गहराई दी। प्रसाद की *कामायनी* में मनु, श्रद्धा और इड़ा के माध्यम से मानव-व्यक्तित्व की विभिन्न शक्तियों—भावना, बुद्धि, कर्म और आनंद—का विश्लेषण मिलता है [6]। यहाँ व्यक्तित्व-निर्माण का अर्थ एकांगी विकास नहीं, बल्कि भाव, विचार और कर्म का संतुलन है।

पंत की कविता में व्यक्तित्व प्रकृति-संबंध से निर्मित होता है। प्रकृति मनुष्य को सौंदर्य, लय, कोमलता और व्यापकता का बोध कराती है। पंत के आरंभिक काव्य में प्रकृति केवल दृश्य नहीं, बल्कि आत्मा का विस्तार है [7]। बाद के काव्य में पंत का व्यक्तित्व-बोध मानवतावादी और सामाजिक चेतना से जुड़ता है। इससे स्पष्ट होता है कि छायावाद का व्यक्तित्व-बोध स्थिर नहीं, बल्कि विकासशील है।

निराला के यहाँ व्यक्तित्व-निर्माण का सबसे प्रखर स्वर स्वाधीनता और प्रतिरोध है। वे रूढ़ि, अन्याय, शोषण और साहित्यिक परंपराओं के अनुकरण के विरुद्ध खड़े होते हैं। उनकी कविता का व्यक्तित्व दार्शनिक, विद्रोही, करुणाशील और संघर्षशील है [8]। महादेवी वर्मा के यहाँ व्यक्तित्व आत्मिक एकांत, वेदना और करुणा से निर्मित होता है। उनकी कविता में आत्मा का मौन संघर्ष मनुष्य को संवेदनशील और नैतिक बनाता है [9]।

3. आत्मबोध: छायावादी कविता की केंद्रीय चेतना

छायावादी कविता का मूल केंद्र आत्मबोध है। आत्मबोध का अर्थ है—अपने अस्तित्व, संवेदना, सीमाओं, आकांक्षाओं और उच्चतर चेतना का अनुभव। यह आत्मबोध केवल 'मैं' की घोषणा नहीं, बल्कि 'मैं' के माध्यम से विराट जीवन से संबंध स्थापित करने की प्रक्रिया है। छायावाद में 'मैं' का उदय आधुनिक हिन्दी कविता की निर्णायक उपलब्धि है। यह 'मैं' आत्ममुग्ध नहीं है; वह खोजता है, प्रश्न करता है, पीड़ित होता है, प्रेम करता है और अपने से बड़े सत्य की ओर बढ़ता है [10]।

प्रसाद के काव्य में आत्मबोध दार्शनिक और सांस्कृतिक रूप ग्रहण करता है। *कामायनी* में मनु का आत्म-संघर्ष मानव सभ्यता के विकास का प्रतीक बन जाता है। मनु का अकेलापन केवल व्यक्तिगत घटना नहीं, बल्कि आधुनिक मनुष्य की मानसिक स्थिति का संकेत है। श्रद्धा मनुष्य के भाव-जगत् और आस्था की प्रतिनिधि है, जबकि इड़ा बौद्धिकता और कर्मशीलता का प्रतीक है [11]। इस प्रकार प्रसाद आत्मबोध को मानवीय संतुलन की खोज से जोड़ते हैं।

महादेवी वर्मा के काव्य में आत्मबोध विरह, वेदना और आध्यात्मिक खोज के माध्यम से व्यक्त होता है। उनकी कविता में 'मैं' एक ऐसी चेतना है जो अपने प्रिय, अपने सत्य और अपनी संपूर्णता की खोज में निरंतर गतिशील है। यह वेदना नकारात्मक नहीं है; यह आत्मशुद्धि और संवेदना-विस्तार का माध्यम है [12]। महादेवी की काव्य-संवेदना में पीड़ा मनुष्य को अधिक करुणाशील बनाती है।

निराला के यहाँ आत्मबोध स्वाभिमान और विद्रोह में बदलता है। वे जीवन की कठोरता से टकराकर भी मनुष्य की गरिमा में विश्वास रखते हैं। 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी कविता में कवि की आत्मानुभूति श्रमशील

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

स्त्री के संघर्ष से जुड़ जाती है [13]। यहाँ आत्मबोध सामाजिक करुणा और न्याय-बोध में परिवर्तित होता है। पंत के यहाँ आत्मबोध प्रकृति से संवाद करते हुए सौंदर्य और मानवता की ओर विकसित होता है [14]।

4. मानवीय मूल्य और छायावादी काव्य-दृष्टि

छायावादी कविता में मानवीय मूल्य अनेक रूपों में व्यक्त होते हैं। इनमें करुणा, प्रेम, स्वतंत्रता, सौंदर्य-बोध, नारी-गरिमा, प्रकृति-संवेदना, आध्यात्मिकता, सहानुभूति और आत्म-सम्मान प्रमुख हैं। छायावाद का मानवीय मूल्य-बोध केवल नैतिक उपदेश नहीं है; वह अनुभूति से जन्म लेता है। कवि पहले जीवन को भीतर से अनुभव करता है, फिर उसे मूल्य के रूप में अभिव्यक्त करता है।

प्रसाद के यहाँ मानव-गरिमा और आनंद-दर्शन प्रमुख मूल्य हैं। वे मनुष्य को निराशा, विघटन और अहंकार से निकालकर समन्वित जीवन की ओर ले जाना चाहते हैं। *कामायनी* में श्रद्धा का महत्त्व इसलिए है कि वह मनुष्य को केवल बुद्धि या कर्म की कठोरता से बचाकर प्रेम, विश्वास और संवेदना की दिशा देती है [15]। पंत के यहाँ सौंदर्य और प्रकृति-संबंध मानवीय मूल्य का रूप ग्रहण करते हैं। प्रकृति मनुष्य को विनम्र, संवेदनशील और सामंजस्यशील बनाती है [16]।

निराला का मानवीय मूल्य-बोध अधिक सामाजिक और प्रतिरोधी है। वे व्यक्ति की स्वतंत्रता, श्रम की गरिमा, स्त्री की पीड़ा और सामाजिक विषमता को गहरे रूप में देखते हैं। 'भिक्षुक', 'वह तोड़ती पत्थर' और 'सरोज-स्मृति' जैसी कविताओं में करुणा निजी नहीं रहती; वह सामाजिक संवेदना का रूप लेती है [17]। निराला का मानवीय दृष्टिकोण छायावाद को सामाजिक धरातल से जोड़ता है।

महादेवी वर्मा की कविता में करुणा सबसे केंद्रीय मानवीय मूल्य है। उनकी वेदना आत्मकेन्द्रित न होकर समष्टिगत पीड़ा का विस्तार बनती है। उनकी गद्य-कृति *श्रृंखला की कड़ियाँ* में नारी-अस्तित्व, बंधन और स्वतंत्रता के प्रश्न स्पष्ट रूप से उठते हैं [18]। इससे सिद्ध होता है कि महादेवी का आत्मबोध स्त्री-संवेदना और मानवीय मुक्ति से जुड़ा हुआ है।

5. प्रकृति, सौंदर्य और व्यक्तित्व का विकास

छायावादी कविता में प्रकृति का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। प्रकृति यहाँ केवल दृश्य-सौंदर्य या वर्णन की वस्तु नहीं है, बल्कि आत्म-विकास का माध्यम है। प्रकृति मनुष्य को अपने सीमित अहं से बाहर निकालकर व्यापक जीवन-सत्ता से जोड़ती है। पंत की कविता में यह प्रकृति-संबंध सर्वाधिक विकसित दिखाई देता है। पर्वत, बादल, पुष्प, पवन, प्रभात, चाँदनी और हरियाली उनके काव्य में सौंदर्य की ऐसी दुनिया बनाते हैं जो मनुष्य के भीतर कोमलता और विस्तार उत्पन्न करती है [19]।

छायावादी प्रकृति-संवेदना में व्यक्तित्व-निर्माण की गहरी संभावना है। प्रकृति मनुष्य को आत्ममंथन, संतुलन और सौंदर्य-बोध सिखाती है। आधुनिक जीवन की यांत्रिकता, उपयोगितावाद और बाहरी स्पर्धा के बीच छायावादी कविता प्रकृति के माध्यम से मनुष्य को संवेदनशील बनाती है। प्रसाद के यहाँ प्रकृति रहस्य और भाव-जगत् से जुड़ती है; पंत के यहाँ वह सौंदर्य और जीवन-लय का प्रतीक है; महादेवी के यहाँ प्रकृति अंतरात्मा के विरह और प्रतीक्षा की सहचरी है; निराला के यहाँ प्रकृति कभी ऊर्जा, कभी करुणा और कभी संघर्ष की पृष्ठभूमि बन जाती है [20]।

सौंदर्य-बोध भी छायावाद में व्यक्तित्व-निर्माण का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। सौंदर्य मनुष्य को केवल आनंद नहीं देता, बल्कि उसे संवेदनशील और नैतिक बनाता है। जो मनुष्य सौंदर्य को अनुभव कर सकता है, वह जीवन की सूक्ष्मता, पीड़ा और करुणा को भी ग्रहण कर सकता है। इसीलिए छायावादी कविता में सौंदर्य और करुणा साथ-साथ चलते हैं।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

6. नारी-चेतना, करुणा और आत्मसम्मान

छायावादी कविता में नारी का स्वर बहुआयामी है। प्रसाद के यहाँ श्रद्धा, इड़ा और अन्य स्त्री-रूपों के माध्यम से नारी को मनुष्य की भावात्मक और बौद्धिक संरचना का आवश्यक अंग माना गया है [21]। पंत की कविता में नारी सौंदर्य, प्रेम और कोमलता की प्रतीक दिखाई देती है, यद्यपि बाद के काव्य में उनका दृष्टिकोण अधिक मानवतावादी हो जाता है। निराला ने नारी को केवल सौंदर्य की वस्तु नहीं माना, बल्कि संघर्षशील, श्रमशील और गरिमामय मनुष्य के रूप में चित्रित किया। 'वह तोड़ती पत्थर' इस दृष्टि से हिन्दी कविता की अत्यंत महत्त्वपूर्ण रचना है [22]।

महादेवी वर्मा ने छायावादी काव्यधारा में स्त्री-अनुभूति को आंतरिक गहराई दी। उनके काव्य में नारी का आत्मसंघर्ष, मौन, वेदना और आत्मसम्मान गंभीर रूप में व्यक्त होता है। उनकी गद्य-रचनाएँ स्त्री की सामाजिक स्थिति और बंधनों पर स्पष्ट आलोचनात्मक दृष्टि प्रस्तुत करती हैं [23]। इस प्रकार छायावादी कविता में नारी केवल प्रेरणा या प्रतीक नहीं है, बल्कि संवेदनशील, आत्मबोधयुक्त और मूल्य-संपन्न व्यक्तित्व है।

छायावादी करुणा भी व्यक्तित्व-निर्माण का आधार है। करुणा मनुष्य को दूसरों के दुख से जोड़ती है। महादेवी की करुणा आध्यात्मिक है, निराला की करुणा सामाजिक है, प्रसाद की करुणा दार्शनिक है और पंत की करुणा सौंदर्यात्मक मानवतावाद से जुड़ी है। ये सभी रूप मिलकर छायावाद को गहरे मानवीय मूल्य प्रदान करते हैं।

7. निराला: विद्रोही व्यक्तित्व और मानवीय स्वतंत्रता

छायावादी कवियों में निराला का व्यक्तित्व सबसे अधिक विद्रोही और स्वाधीन दिखाई देता है। उन्होंने काव्य-रूप, भाषा, छंद, विषय और दृष्टि—सभी स्तरों पर परंपरागत बंधनों को चुनौती दी। उनके लिए व्यक्तित्व-निर्माण का अर्थ था—स्वतंत्र विचार, अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध, संवेदना की प्रामाणिकता और मनुष्य की गरिमा की रक्षा [24]।

निराला का आत्मबोध आत्मसम्मान से जुड़ा है। वे जीवन में गरीबी, संघर्ष, उपेक्षा और व्यक्तिगत दुखों से गुजरे, परंतु उनकी कविता में पराजय का स्वर नहीं, बल्कि मनुष्य की असाधारण जीवटता का स्वर मिलता है। 'सरोज-स्मृति' में निजी शोक व्यापक मानवीय करुणा में बदल जाता है [25]। 'राम की शक्ति पूजा' में संघर्ष, संकल्प और आत्मविश्वास के माध्यम से व्यक्तित्व की ऊर्जा व्यक्त होती है [26]।

निराला छायावाद को सामाजिक यथार्थ की ओर ले जाने वाले प्रमुख कवि हैं। उनके यहाँ आत्मबोध समाज-विमुख नहीं है। वे शोषित और उपेक्षित मनुष्य के पक्ष में खड़े होते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि छायावादी व्यक्तित्व केवल सौंदर्य और रहस्य तक सीमित नहीं, बल्कि न्याय और स्वतंत्रता से भी जुड़ा हुआ है।

8. महादेवी वर्मा: वेदना, आत्मबोध और संवेदनात्मक व्यक्तित्व

महादेवी वर्मा की कविता छायावादी आत्मबोध की सबसे सूक्ष्म और गहरी अभिव्यक्तियों में से है। उनकी काव्य-संवेदना में वेदना, विरह, मौन, प्रतीक्षा और करुणा प्रमुख हैं। किंतु यह वेदना निष्क्रिय नहीं है। यह आत्मा को परिष्कृत करती है और मनुष्य को अधिक संवेदनशील बनाती है। महादेवी के यहाँ व्यक्तित्व-निर्माण आंतरिक साधना के रूप में उपस्थित है [27]।

उनकी कविता का 'मैं' किसी सांसारिक उपलब्धि की खोज में नहीं है, बल्कि एक ऐसे प्रिय, सत्य या पूर्णता की खोज में है जो जीवन को अर्थ देता है। इस खोज में अकेलापन है, परंतु यह अकेलापन आत्महीनता नहीं, बल्कि आत्म-गहराई का माध्यम है। महादेवी की काव्य-चेतना में करुणा अत्यंत व्यापक है। यही करुणा उन्हें मनुष्य, पशु, प्रकृति और स्त्री-अस्तित्व से जोड़ती है [28]।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

महादेवी वर्मा का योगदान यह है कि उन्होंने छायावादी आत्मानुभूति को स्त्री-चेतना और मानवीय करुणा से समृद्ध किया। उनकी कविता व्यक्तित्व को बाहरी संघर्ष से अधिक आंतरिक अनुशासन, संवेदना और आत्म-संवाद से निर्मित मानती है।

9. छायावादी कविता की शैक्षिक और नैतिक प्रासंगिकता

छायावादी कविता आज भी व्यक्तित्व-निर्माण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। आधुनिक समाज में व्यक्ति बाहरी सफलता, प्रतिस्पर्धा, उपभोग और तकनीकी जीवन के दबाव में अनेक बार संवेदनहीनता, अकेलेपन और मूल्य-संकट से गुजरता है। ऐसे समय में छायावादी कविता आत्ममंथन, करुणा, सौंदर्य-बोध, प्रकृति-संबंध और स्वतंत्र चिंतन की शिक्षा देती है [29]। यह कविता मनुष्य को केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और नैतिक रूप से भी विकसित करती है।

शिक्षा के संदर्भ में छायावादी कविता विद्यार्थियों में संवेदनशीलता, आत्म-अनुशासन, सौंदर्य-बोध, सहानुभूति और मानवीय दृष्टि विकसित कर सकती है। प्रसाद से समन्वय और आत्म-संतुलन, पंत से प्रकृति-संवेदना, निराला से स्वाधीनता और सामाजिक करुणा, तथा महादेवी से आत्मबोध और करुणा का मूल्य ग्रहण किया जा सकता है। इस प्रकार छायावादी कविता केवल साहित्यिक अध्ययन की वस्तु नहीं, बल्कि व्यक्तित्व-विकास और मूल्य-शिक्षा का भी महत्त्वपूर्ण आधार है।

10. निष्कर्ष

छायावादी कविता में व्यक्तित्व-निर्माण, आत्मबोध और मानवीय मूल्य परस्पर जुड़े हुए तत्त्व हैं। छायावाद ने हिन्दी कविता में व्यक्ति की आंतरिक सत्ता को प्रतिष्ठित किया, परंतु यह व्यक्ति समाज से कटा हुआ नहीं है। वह प्रकृति से संवाद करता है, सौंदर्य का अनुभव करता है, वेदना से गुजरता है, अन्याय के विरुद्ध खड़ा होता है और अंततः मानवीय करुणा तथा स्वतंत्रता की ओर अग्रसर होता है।

जयशंकर प्रसाद के यहाँ व्यक्तित्व समन्वय, आनंद और सांस्कृतिक चेतना से निर्मित होता है। पंत के यहाँ प्रकृति और सौंदर्य मनुष्य को संवेदनशील बनाते हैं। निराला के यहाँ व्यक्तित्व स्वाधीनता, विद्रोह और सामाजिक न्याय से जुड़ता है। महादेवी वर्मा के यहाँ आत्मबोध वेदना, करुणा और आध्यात्मिक साधना के माध्यम से विकसित होता है। इस प्रकार छायावादी कविता आधुनिक मनुष्य को यह संदेश देती है कि वास्तविक व्यक्तित्व बाह्य सफलता से नहीं, बल्कि आत्म-चेतना, संवेदना, करुणा, स्वतंत्रता और मानवीय मूल्यों से निर्मित होता है।

संदर्भ-सूची

1. रामचंद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा, 2009.
2. नंददुलारे वाजपेयी, हिन्दी साहित्य: बीसवीं शताब्दी. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2010.
3. नामवर सिंह, छायावाद. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2012.
4. हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2007.
5. नंददुलारे वाजपेयी, छायावाद. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2008.
6. जयशंकर प्रसाद, कामायनी. वाराणसी: भारती भंडार, 2007.
7. सुमित्रानंदन पंत, पल्लव. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2005.
8. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', परिमल. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.
9. महादेवी वर्मा, यामा. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2008.

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

10. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, आधुनिक हिन्दी कविता. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2014.
11. रामविलास शर्मा, निराला की साहित्य साधना, भाग 1. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2007.
12. महादेवी वर्मा, दीपशिखा. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2009.
13. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', अनामिका. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.
14. सुमित्रानंदन पंत, गुंजन. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2004.
15. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2011.
16. बच्चन सिंह, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, 2015.
17. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सरोज-स्मृति. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.
18. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2011.
19. सुमित्रानंदन पंत, ग्राम्या. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2004.
20. नामवर सिंह, कविता के नए प्रतिमान. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2011.
21. जयशंकर प्रसाद, आँसू. वाराणसी: भारती भंडार, 2008.
22. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', कुकुरमुत्ता. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2007.
23. महादेवी वर्मा, अतीत के चलचित्र. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2010.
24. रामविलास शर्मा, निराला की साहित्य साधना, भाग 2. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2007.
25. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', गीतिका. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.
26. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', राम की शक्ति पूजा. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2008.
27. लक्ष्मीकांत वर्मा, छायावादी काव्य और चेतना. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2006.
28. महादेवी वर्मा, स्मृति की रेखाएँ. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2010.
29. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिन्दी कविता का विकास. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, 2012.

© Copyright @ Authors